Original Article
ISSN (Online): 2582-7472

ShodhKosh: Journal of Visual and Performing Arts
February 2024 5(2), 1430–1434

IN THE AWAKENING OF INDIA'S 'SELF' LITERATURE OF AKHIL BHARATIYA SAHITYA PARISHAD

भारत के 'स्व' के जागरण में अखिल भारतीय साहित्य परिषद का साहित्य

Bharat Thakor [1]

[1] Department of Gujarati, Veer Narmad South Gujarat University, Surat– 395007, India

DOI
10.29121/shodhkosh.v5.i2.2024.6027

Funding: This research received no specific grant from any funding agency in the public, commercial, or not-for-profit sectors.

Copyright: © 2024 The Author(s). This work is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.

With the license CC-BY, authors retain the copyright, allowing anyone to download, reuse, re-print, modify, distribute, and/or copy their contribution. The work must be properly attributed to its author.

OPEN ACCESS

ABSTRACT

English: Sri Aurobindo had said that the intellectual decline of any great nation always begins with the degradation of three qualities. These three qualities are- the ability to think judiciously, to compare and differentiate and to express. These three qualities are related to the study of philosophy, thinking, literature and history etc.
Discussion has been an ancient tradition of India. This tradition has been constantly evolving. As a result of this, some idea has been propounded, yet questions have been raised from time to time regarding its usefulness and uselessness. And an attempt was made to answer it. The external world and the internal world were analyzed. The conclusions that were found were compiled and an attempt was made to give them direction. If any conclusion was useless due to the influence of time. It is the nature of consciousness, it is always changing but when something changes, it does not happen in one direction only. It is universally accepted that literature has evolved, but it is also necessary to see and understand how it has evolved. Our culture, religion, philosophy, devotion, Vedic knowledge, science, rituals, civilization, literature, music, history and our way of life are ancient and ever new. Literature makes this flow continuous and eternal..

Hindi: श्री अरविन्द ने कहा था किसी भी महान देश का बौद्धिक पतन सदैव तीन गुणों के क्षरण से आरंभ होता है। यह तीन गुण है– विवेकपूर्ण विचार करने, तुलना व विभेद करने तथा अभिव्यक्ति की क्षमता। इन तीन गुणों का संबंध दर्शन, चिंतन, साहित्य ओर इतिहास आदि के अध्ययन से है।
विचार विमर्श भारत की प्राचीन परम्परा रही है। यह परमम्परा सतत विकसित होती रही है। इस के फलस्वरूप कोई एक विचार का प्रतिपादन हुआ है, फिर भी उसकी उपयोगिता, अनुपयोगिता को लेकर, समय समय पर उसके सामने प्रश्न खड़े कीए गए। और उसके उत्तर देने का प्रयत्न हुआ। बहिर्जगत और अंतर्जगत क़ा विशलेषण कीया गया। जो निषकर्ष मिले उन्हें संकलित और दिशा देने क़ा प्रयन्त कीया गया। काल के प्रभाव में अगर कोई निषकर्ष निरुपयोगी था। चेतना का स्वभाव ही है, नित्य परिवर्तनशील है पर जब कोई चीज परिवर्त्तित होती है तो वह एक ही दिशा में नहीं होती है। साहित्य का विकास हुआ है, यह सर्व स्वीकृत है पर कीस तरह से विकास हुआ है वह भी देखना, समजना आवश्यक बनता है। हमारी संस्कृति, धर्म, दर्शन, भक्ति, वैदिक ज्ञान - विज्ञान, कर्मकांड, सभ्यता, साहित्य, संगीत, इतिहास और हमारी जीवन पद्धति की दृष्टि में चिरपुरातन एवं नित्य नूतन है। इस प्रवाह को निरंतर और शासवत बनाता है साहित्य।

1. प्रस्तावना

अखिल भारतीय साहित्य परिषद्, साहित्य के क्षेत्र में भारतीय दृष्टि को स्थापित करने, देश के बौद्धिक वातावरण को स्वस्थ बनाने, समस्त भारतीय भाषाओं एवं उनके साहित्य का संरक्षण करने तथा नवोदित साहित्यकारों को प्रोत्साहन देते हुए कार्य करने वाली संस्था – संगठन है। साहित्य परिषद् अपने स्थापना काल से ही विभिन्न भारतीय भाषाओं के सर्जनात्मक एवं आलोचनात्मक लेखन में भारत-भक्ति के भाव के जागरण का कार्य पिछले ५९ बरसों से एकाग्रचित्त से कर रही है। भिन्न भिन्न तरह की गति विधियों से समाज जागरण का कार्य बौद्धिक जगत के क्षेत्र में करता है। इस में साहित्य प्रकाशन का महत्वपूर्ण कार्य सातत्य पूर्ण रूप से हो रहा है जो अकादमिक विषयों से अलग ओर समाज की ओर राष्ट्र की चिति को पुनः जाग्रत करने का भगीरथ प्रयास है।

स्वतंत्रता के पश्चात् रचे गये साहित्य में प्रयत्नपूर्वक देश, धर्म, संस्कृति इत्यादि विषयों की जानबूझकर उपेक्षा की गयी है। परिणामस्वरूप साहित्य धीरे-धीरे सामान्य व्यक्ति की रूचि और पकड़ से दूर होता जा रहा है। परिषद् ने साहित्य में राष्ट्र प्रेम और सकारत्मकता को प्रारंभ से ही महत्व दिया है। साहित्यकारों को इन विषयों पर चिंतन एवं लेखन के लिये प्रवृत्त करने की दृष्टि से समय समय पर संगोष्ठियों का आयोजन किया जा रहा है। प्रयास रहता है कि सभी प्रान्तों और सभी भारतीय भाषाओं के साहित्यकारों की इन संगोष्ठियों सहभागिता रहे। एक मंच पर उपस्थित होकर अपनी बात रख सके। आपस में विचार-विमर्श कर सके। संगोष्ठी के विषय पर शोध आलेखों का प्रकाशन किया जाये। पहले इन शोध आलेखों का प्रकाशन परिषद् की पत्रिका 'साहित्य परिक्रमा' का विशेषांक प्रकाशित कर किया जाता था। अब शोध आलेखों को पुस्तक रूप में प्रकाशित किया जाता है। साहित्य परिषद् के प्रकाशनों को आई.एस.बी.एन. प्राप्त है। इससे परिषद् के प्रकाशनों का महत्व अधिक बढ़ गया है।

साहित्य का हमारे जीवन, समाज और संस्कृति से गहरा संबंध है। वर्तमान साहित्य की एक प्रभावशाली धारा के सृजन में भारतीय सनातन मूल्यों का कोई संज्ञान नहीं लिया जा रहा है। इससे जहाँ एक ओर पाठक आनंद और श्रेयस के तत्त्वों से ही वंचित हो रहा है, वहीं साहित्य स्वयं भी भारतीय चिति और समाज की मूलधारा से अलग होता जा रहा है। परिणामतः समाज में अपसंस्कृति की संभ्रम की स्थितियाँ उत्पन्न हो रही हैं। इन स्थितियों को उजागर करते हुए अपने मूल स्वभाव और साहित्य – धर्म को समझना वर्तमान की सबसे बड़ी आवश्यकता है। अतीत परंपरा की पीठिका है। उसका बीज-भाव है। वर्तमान उसी की प्रसूति है। हमें साहित्य को उससे हटकर नहीं, अपितु सटकर नीर-क्षीर-विवेक से देखना चाहिए। परम्परा एक ऐतिहासिक बोध है, जो अतीत के व्यतीत का नहीं, उसके वर्तमान का दर्शन है। परंपरा की कर्क रेखा अतीत से चलकर वर्तमान तक आती है। साहित्य की परंपरा का इतिहास एक ऐसी जमीन है, जिस पर खड़ा होकर रचनाकार अपनी रचनात्मकता की संभावनाओं के नए द्वार खोलता है।

साहित्य में आगत सनातन तत्त्वों का साक्ष्य ही लुप्त होती जा रही सनातनी प्रवृत्तियों की वापिसी में सहायक है। साहित्य में स्थायित्व के अभाव पर विचार करते हुए हमें यह सोचना चाहिए कि साहित्य परंपरा से कभी अलग नहीं हो सकता। वह परंपरा से नई अभिव्यक्तियों की माँग करता है। जब हम परंपरा के अनुशासन से जुड़ते हैं तो साहित्य, अतीत एवं वर्तमान के साक्ष्य को मिलाकर रचनाशीलता का समर्थ एवं ठोस आधार तैयार करता हैं और आधुनिक तकनीकी की श्रेष्ठता को सिद्ध करता है।

इक्कीसवीं सदी के साहित्य के मूल स्वर की पडताल स्वीकार करने के लिए हमें समकालीन साहित्य के प्रवाह को समझने की आवश्यकता है। आज हमारे साहित्य से मनुष्य और उसके चरित्र का क्षरण होता जा रहा है। वास्तव में मानवीय सत्य को समग्रता में देखने की दृष्टि विज्ञान और दर्शन की असफलता के बाद यदि किसी में है तो साहित्य में है। भाषा मनुष्य का सबसे बडा सरोकार है। अभिव्यक्ति की वह सबसे बडी निधि है। इसके अभाव में हम अपने अस्तित्व की कल्पना ही नहीं कर सकते।

अभी तक अखिल भारतीय साहित्य परिषद के द्वारा विभिन्न राष्ट्रीय संगोष्ठियों का आयोजन किया जा चुका है। उन विषयों पर ३५ से भी अधिक जो ग्रंथ प्रकाशित हुए है इनमें से प्रमुख है उस के विषय मे एक परिचयात्मक दृष्टि से देखते है-

'भारतीय साहित्य में राष्ट्रीयता के स्वर' नामक ग्रंथ प्रगट होता है। इस ग्रंथ में ४६ आलेख समाविष्ट किए गए है। उस मे हमारे देश में जो अनेक भाषाएं और बोलियां है। उस प्रत्येक भाषा का साहित्य अपनी विशेषता और आंचलिकता लिये है। फिर भी उनमें कथ्य और तथ्य एक ही है। प्रत्येक भाषा के साहित्यकार ने देश, धर्म और राष्ट्रीयता को किस प्रकार वर्णित किया है। उसका वर्णन इस ग्रंथ में किया गया है।

'भारतीय नाट्य रंग' नामक ग्रंथ में कुल ५६ आलेख समाविष्ट है। इस ग्रंथ मे भारतीय नाट्य परंपरा का एक व्यापक परिचय मिल रहा है। कहा जाता है कि हमारे देश में नाटक विधा बाहर से आयी है, जो कि नितान्त झूठ है। भारतीय नाट्य शास्त्र अपने में परिपूर्ण तथा प्राचीनतम है। विभिन्न प्रान्तों और प्रादेशिक भाषाओं के नाटक लेखन, मंचन की दशा और दिशा पर संगोष्ठी में गहन चर्चा इन आलेखों मैं की गयी।

'समकालीन साहित्य में हास्य-व्यंग्य' ग्रंथ में आजके हास्य का स्थान फूहड़ता और अश्लीलता ने ले लिया है उस के विषय मे चिंता ओर चिंतन प्रगट हो रहाँ है। सार्थक व्यंग्य का भी अभाव खटकने वाला है। हास्य-व्यंग्य के मूलभूत तत्वों को स्मरण करते हुए गहन चर्चा इस ग्रंथ मे की गयी है।

'भारतीय साहित्य और कुटुम्ब' इस ग्रंथ में कुटुम्ब भारतीयता की नींव का अहम घटक है। अर्थप्रधान प्रवृत्ति और वर्तमान परिस्थितियों के चलते कुटुम्ब व्यवस्था पर प्रश्न चिन्ह ही नहीं लगा है, बल्कि टूटने के कगार पर है। कुटुम्ब व्यवस्था के संगोपन में वर्तमान साहित्य सकारात्मक भूमिका किस प्रकार निभा सकता है, इस ओर ध्यान आकर्षित करने के लिये यह विषय साहित्यकारों के सामने रखा गया। इस ग्रंथ में ३१ आलेख समाविष्ट है। जिनमें वर्तमान साहित्य में भारतीय कुटुम्ब – मूल्यों की स्थापना की बातों को रेखांकित किया गया है। इस विषय से भारतीय साहित्य मे एकात्मदर्शन का परिचय मिलता है साथ मे परिवार की भारतीय समाज व्यवस्था का व्यापक मूल्यों का दर्शन भी होता है।

'संतों का साहित्यिक अवदान' ग्रंथ मे कुल ५० आलेख है। जिस मे समग्र भारत के संतों का एक महत्वपूर्ण योगदान का परिचय मिलता है। संत साहित्य भारतीय साहित्य की आत्मा है। वैयक्तिक साधना के द्वारा प्राप्त आत्मिक अनुभूति के आधार पर संतों द्वारा रचित साहित्य लोक मान्यता के कारण कालजयी साहित्य है। योजनापूर्वक संतों के साहित्य को उपेक्षित किया गया। कंठ-कंठ में विराजित साहित्य को तिरस्कृत करने के लिये प्रक्षिप्त भाग को चर्चा में लाकर विवाद खड़े किये गये। कहीं तो संतों को ही विवादित किया गया। बड़ी संख्या ऐसे संतों की भी है जिनका साहित्य प्रकाश में ही नहीं आ सका। इसे ध्यान में रख कर संत साहित्य जो संगोष्ठी हुई थी उस के परिपाक में यह महतपूर्ण ग्रंथ प्राप्त होता है।

'राष्ट्रीय अस्मिता और वर्तमान साहित्य' इस ग्रंथ में राष्ट्रीय अस्मिता का सीधा संबंध हमारी संस्कृति तथा सभ्यता से है, एतद संस्कृति एवं सभ्यता पर हुआ हर आघात हमारी अस्मिता पर सीधे-सीधे प्रहार करता है। साहित्य समाज से प्रभावित होता भी है और वह समाज को प्रभावित करता भी है

तभी तो राष्ट्रीय अस्मिता के संदर्भ में वर्तमान साहित्य की चर्चा होना अत्यंत आवश्यक है। यह ग्रंथ मे अस्मिता के साथ साथ अस्तित्व ओर अपनी भारतीय पहचान को उजागर करने वाले आलेख समाविस्ट है।

भगवान श्रीराम राष्ट्रीय एकात्मता के प्रतीक पुरुष है। वे सभी भारतीय भाषाओं, बोलियों, लोकगीतों एवं लोककथाओं में व्याप्त है। भगवान राम, कृष्ण और के प्रतिपाद्य विषय रहे है। विभिन्न भाषाओं तथा बोलियों में वर्णित भगवान श्रीराम के विविध भावरूपों पर चर्चा के निमित्त भगवान **राम के वनमार्ग गमन** के ही एक महत्वपूर्ण इस विषय के **ग्रंथ में 84 शोध** आलेखों पर चर्चा हुई। राम जन-जन के आराध्य हैं। ये तीनों भारतीय जनमानस की धुरी हैं। ये हमारी संस्कृति के आधार हैं। कला, संगीत, साहित्य के प्रमुख प्रतिपाद्य हैं। कोई भाषा अथवा बोली नहीं है जो इनका गुण वर्णन न करती हो, तभी तो भगवान राम के चरित्र का प्रतिपादन प्रत्येक भाषा के साहित्यकारों ने किया है। भारत की भिन्न भिन्न बोलियों में लोकगीत तथा लोककथाओं में रामचरित्र प्रकटीकरण होता है। समाज जीवन में व्याप्त रीति-रिवाज, तीज-त्यौहार भी राम से अछूते नहीं रह सके। जो **'भाव रूप राम'** मे समाविस्ट है।

साहित्य और समाज जागरण की दृष्टि से बंगाल अग्रणी रहा है। स्वामी विवेकानन्द, राजा राममोहन राय, केशवचन्द्र सेन जैसे समाज सुधारक और बंकिमचन्द्र, रवीन्द्रनाथ टैगोर, शरतचन्द्र जैसे साहित्यकारों का प्रभाव संपूर्ण भारत पर रहा है। इसी की एक बार फिर से पड़ताल रवीन्द्रनाथ टैगौर की कर्मस्थली शांतिनिकेतन-बंगाल की भूमि पर की गयी। उस विषय पर जो २४ आलेख आए थे उसको **'बांग्ला साहित्य का भारतीय साहित्य पर प्रभाव'** नामक ग्रंथ मे प्रकाशित किया गया है।

सामान्य पाठक इतिहास का गहन अध्येता नहीं होता। न तो उसकी रूचि इतिहास के गहन अध्ययन में होती है, न प्रत्येक के लिये यह संभव होता है। सामान्यतः वह इतिहास को उपन्यासों के माध्यम से ही जानता है और उसे ही सत्य मानता है। ऐसे में ऐतिहासिक उपन्यासकारों का दायित्व बनता है कि वह अपने उपन्यासों में इतिहास तत्व को अधिक प्रामाणिकता व गंभीरता से प्रस्तुत करे। इस लिए **'ऐतिहासिक उपन्यासों का समाज जागृति में योगदान'** नामक ग्रंथ प्रकाशित किया जिस मे ३४ आलेख समाविस्ट है।

शौर्य मनुष्य जीवन का महत्वपूर्ण भाव है। इसके अभाव में मनुष्य अपनी निजता खो देता है। इस भाव का अभाव वर्तमान में सर्वत्र परिलक्षित हो रहा है। शौर्य भाव क्या है? भारतीय साहित्य में इसका उद्बोधन समय-समय पर किस रूप में हुआ है। वर्तमान साहित्य में शौर्य भाव का प्रकटीकरण की स्थिति क्या है। यह **'भारतीय साहित्य में शौर्य भाव'** इस ग्रंथ मे मिलता है। इस ग्रंथ मे कुल ३२ आलेख समाविस्ट हुए है।

'शिवो भूत्वा शिवं यजते' ग्रंथ मे संग्रहीत आलेखों में शिव के भक्तों एवं शिव दोनों के व्यक्तित्व संबंधी अनेक परिदृष्य निर्मित हुए है। इन मे से कई आलेखों में शिव लिंगों का वैविध्य और शिल्प स्थापत्य के संदर्भ मिलते है। इस ग्रंथ में कुल २४ आलेख संचित हुए है। **'दक्षिण भारत का लोक साहित्य'** ग्रंथ में ४५ आलेख समाविस्ट है । इस ग्रंथ मे लोकसाहित्य के आलेखों मे से पसार होते है तो भारतीय समाज की एकात्मता का सहज परिचय मिलता है। तो **'पूर्वोत्तर का भक्ति साहित्य'** ग्रंथ मे ४८ आलेखों समाविस्ट किया गया है। इस ग्रंथ मे पूर्वोत्तर के संतों के साथ साथ जनजीवन से जुड़डी पूजा पद्धतियाँ का परिचय मिलता है। **'साहित्य में सामाजिक समरसता'** इस ग्रंथ में ४१ आलेख समाविस्ट है। इस ग्रंथ में भारत की एकतात्मता, सौहर्द्रता और समरसता का परिचय मिलता है। भारत की गौरशाली परंपरा का और संस्कृति का उत्तम शिखर देखनों – महसूस कर सकते है।

दूसरा एक महत्वपूर्ण ग्रंथ मिलता है वह है **'नवलेखन की चुनौतियाँ'** इस ग्रंथ मे २५ से अधिक आलेख और इस विषय की गहन चर्चा मिलती है जो आज के वर्तमान समय मे नई युवा पीढ़ी को लेखन करने मे मार्गदर्शक बन सकता है।

'राष्ट्रीय एकता और भारतीय साहित्य' इस ग्रंथ मे ५३ आलेख समाविस्ट है। इस ग्रंथ में साहित्यकारों की राष्ट्र के प्रति का अनुपम जो भाव है वह प्रगट होता है उस के साथ ही भारत के आत्मा को बरसों से आहत करने वालों के जो विफल प्रयास रहै है उस के सामने भारत के चेतना को सदैव संक्षण देने वाले साहित्यकारों की भावन का रचनात्मक भाव प्रगट हुआ है।

'भारतीय भाषाओं और साहित्य की एकात्मता' इस ग्रंथ मे ३९ आलेख समाहित किए गए है। जिस में भारतीय भाषाओं और साहित्य की एकात्मता भारत की सुदृढ़, समृद्ध समन्वयवादी संस्कृति की प्रमाण है। जिसमें विविधताओं में एकता का मंत्र है, अखण्ड भारत के सौन्दर्य की छटा भी। भारत में कितने ही मतमतान्तर अस्तित्व में रहे हों, सामाजिक समरसता, सौहार्द्रभाव निरन्तर प्रवाहमान रहा है। अपने कठिनतम समय में भी यहाँ एक सकारात्मक आस्था व विश्वास से युक्त एकात्मभाव इसलिए दृढ़ रहा क्योंकि भारतीय चिन्तन दर्शन में आध्यात्म प्रमुख था। यही आध्यात्मिक चिन्तन भारतीय संस्कृति और साहित्य का मूल तत्त्व है। प्रकृति के कण-कण में सुख-दुख की अनुभूति प्रतीत करना, दूसरे के अहं का सम्मान करना, एकात्मभाव की प्रतिष्ठा करता है। इसमें समस्त चराचर से प्रेम का भाव है, निजस्वार्थ से ऊपर उठकर जगत से आत्मीय सम्बन्ध की स्थापना है, लोककल्याण हेतु सर्वस्व समर्पण है।

इसी लोकमंगल की भावना से की गयी सृजना ही साहित्य है। व्यष्टिगत से समष्टिगत की यात्रा का सहभागी साहित्य बनाता है। इसीलिए साहित्य को 'हितेनं सहितं साहित्य' कहा गया। भारतीय साहित्य वाङ्मय हमारे संस्कारों को पुष्ट कर ऐसी हिरण्यमय दृष्टि प्रदान करता है जिसमें समस्त कटुता, वैमनस्य, घृणा, ईर्ष्या, द्वेष के भाव नष्ट हो जाते हैं और शेष रह जाता है- करुणा, मंगल की भावना, प्रार्थना, प्रेम और आनन्द। इस प्रकार यह ऊर्ध्वगामी यात्रा स्व का विस्तार है। समस्त सृष्टि से आत्मीय संबंध का अनुबन्ध है। चाहे वह भारत की किसी भी भाषा में रचित हो। यही भारत की विविध भाषाओं और साहित्य की एकात्मता है।

इस श्रृंखला में **'भारतीय साहित्य में लोकोक्तियाँ और मुहावरे'** इस ग्रंथ में ५८ आलेख समाविस्ट है। इस ग्रंथ के आलेखों मे भारतीय भाषाओ के साहित्य, संस्कृति और समाज का परिचय मिलता है। संस्कृति को सदेव जीवंत रखने की अक्षुण्णता लोकोक्तियों में पाई जाती है।

'साहित्य और लोक जीवन में हिमालय' ईस ग्रंथ में साहित्यकारों ने हिमालय का गौरव-गान करके अपनी लेखनी को धन्य किया है। हर्ष का विषय है कि वर्तमान में भी ऐसे अनेक लेखक हैं, जो हिमालय की महत्ता का वर्णन कर रहे हैं। हिमालय के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित कर, प्रकृति के इस अमूल्य खजाने के, विभिन्न आयामों की महत्ता दर्शाते लेखों से, वे मानवता का उपकार कर रहे हैं। यह पुस्तक ऐसे ही अनेक मणि-मुक्ताओं का संग्रह कर उन्हें पुस्तकाकार देकर साहित्य, संस्कृति एवं प्रकृति के अंतः संबंधों को समझाने में सहायक सिद्ध होगा।

'नाथ परंपरा का साहित्य पर प्रभाव' इस पुस्तक में ५० आलेख को सम्मिलित किया गया है, जो नाथ परंपरा के परिचय, पृष्ठभूमि, स्वरूप, नाथ शब्दावली, नाथ योगियों की विशेषताएं, नाथ पंथ का प्रसार-प्रभाव, नाथ परंपरा की प्रासंगिकता आदि समस्त अवयवों को समेटने का प्रयास हैं। इस पुस्तक के माध्यम से पाठकों के समक्ष नाथ परंपरा की प्रमाणिक एवं मुकम्मल तस्वीर प्रस्तुत हो रही हैं, जो नाथ परंपरा से संबंधित उनके ज्ञान को आधिकारिक रूप से पुख्ता कर सकेगी। भारतीय ज्ञान परंपरा संबंधित उनकी बौद्धिक समझ विकसित करने में भी यह ग्रंथ सहायक सिद्ध होगा।

'स्वराज ७५ भारत का स्वाधीनता आंदोलन और साहित्य' इस ग्रंथ में ६७ आलेख समाविस्ट है। इस ग्रंथ मैं भारत के अनेक साहित्यकारों के साहित्य का आलेख मिल रहाँ है जो अंग्रेजों के समय में प्रतिबंधित कर दिया गया था। इस ग्रंथ मे अज्ञात और ज्ञात कवियों और साहित्यकारों के साहित्य में स्वाधीनता की ज्योत प्रगट होती हुई दिख रही है साथ ही साथ उस कालखंड में अंग्रेजोने जो अत्याचार किए थे उस का आलेख भी वर्णित हुआ मिल रहा है।

'संस्कृति की पोषक नदियाँ' इस ग्रंथ मे हमारे ऋषि-मुनि नदियों के किनारे एकांत में बैठकर सालों तक तपस्या करते थे। आज भी हम कई उत्सव और त्यौहार अपने विशाल हृदय में सबको समेटने वाली, सभी को अपनी धन-संपदा का समान रूप से वितरण करने वाली जीवनदायिनी नदियों के साथ मनाते हैं। हिन्दू धर्म में तो मनुष्य के जीवन की अंतिम यात्रा भी इनकी गोद में खत्म होती है। इस विषय में कुल ४२ आलेख समाविस्ट किए गए है। जिस में नदियों के कल कल प्रवाह की अनुगूँज सुनाई देती है। वर्तमान परिवेश और विकसित समाज की आकांक्षा के परिप्रेक्ष्य में सांस्कृतिक जागरण की अभिलाषा के फलस्वरूप इस पुस्तक द्वारा नदियों से पोषित संस्कृति पर गहन चर्चा विमर्श हुआ है।

'नए भारत का साहित्य' इस ग्रंथ में ६७ आलेख समाविस्ट किए गए है। इस में साहित्य का अमृत को पुनः देखने का प्रयास है। अमृतकाल की अनुभूतियाँ को साहिय के माध्यम से आत्मसात करने का अब समय है उस की एक अनुगूँज सुनाई पड़ती है। अतः नये भारत के साहित्य पर केंद्रित यह संकलन में आज के भारतीय साहित्य का यह विश्लेषण भविष्य हेतु आधारभूत संरचना निर्मित करने में सहायक सिद्ध होगा एसा मुजे प्रतीत होता है।

इस के अतिरिक्त अखिल भारतीय साहित्य परिषद के संगठनात्मक साहित्य, **अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता और साहित्य**, **हमारे साहित्यकार,** साहित्यकार, पता निर्देशिका, कार्यकर्ताओ के लिए प्रबोधन में उपयोगी **चिंतन-मंथन और साहित्य परिषद** के राष्ट्रीय संगठन मंत्री परम आदरणीय **श्रीधर पराड़कर** द्वारा लिखित **'साहित्य का धर्म'** ग्रंथ समग्र भारतीय साहित्य को दिशा देनेवाला महत्वपूर्ण ग्रंथ है। **'साहित्य परिषद् का इतिहास'** एक एतिहासिक ग्रंथ है जो परिषद के इतिहास का जीवंत दस्तावेज है। तदुपरांत परिषद् की स्वर्ण जयन्ती उत्सव की पुस्तिका और परिषद् परिचय पुस्तिका कार्यकर्ताओ के कार्य विकास मे सेतुरुप बनती है। साहित्य परिषद ने इस ग्रंथों के अलावा व्यक्तिगत पुस्तकें भी प्रकाशित की है जिन में डॉ. साधना बलवटे लिखित **'शरद जोशी व्यंग्य के आर-पार'** और **'नीर-क्षीर'** ग्रंथ समीक्षा के है। डॉ. लोकेश तिवारी **आसपास की** (कविता संगह), गजेन्द्र आर्य की तीन पुस्तके जीस मे **'बकरी माता'** (ग्रामीण कथा संग्रह), **'भगोरिया'**(नाटक), **'धार की रानी'**(नाटक), डॉ. योगेन्द्र गोस्वामी लिखित **'भक्तकवि रसखान एक अध्ययन'**, **'एक और अन्तराल काव्य रूपक'**

अखिल भारतीय साहित्य परिषद का विशेष आयाम है –

साहित्य संवर्धन यात्राएं। भारतीय साहित्य में यात्रावृत अभी तक उपेक्षित ही रहा है। साथ ही परिवेश से जुड़ कर अनुभूत साहित्य लेखन की प्रवृत्ति कम दिखायी देती है। स्थान विशेष पर जाकर लेखन वास्तविकता के अनुरूप होता है और लेखन प्रवृत्ति को प्रोत्साहित करता है। परिषद् ने प्रयोग किया है कि साहित्यकार स्थान विशेष पर जाकर वहां के निवासियों से चर्चा करे, परिस्थिति से परिचित हों, परम्पराओं को जाने और फिर लेखन कार्य सम्पादित करे।

इस निमित्त देश में अत्यन्त प्रतिकूल वातावरण वाले सुदूरवती **लाहौल-स्पीति, पाकिस्तानी सीमा के समीप गुजरात के नड़ाबेट, सांस्कृतिक नगरी जगन्नाथपुरी, जनजाति क्षेत्र जौनसार, वनवासी क्षेत्र झाबुआ, कांति तीर्थ अंदमान, चंबल के बीहड़ों की यात्रा** कर यात्रावृत्त तैयार किये गये।

इसी प्रकार रामायण का उत्तरार्द्ध जिस भूमि पर घटित हुआ उस श्रीलंका उस यात्रा का साहित्य **देशान्तर** यात्रा वृत्त (इंग्लैण्ड-श्रीलंका), यात्रा वृत्त **'देस-परदेस'** ग्रंथ में देश-विदेश की यात्राओ का वर्णन मिलता है। संसार के सबसे बड़े मंदिर के देश कंबोडिया, मंदिरों बहुलता वाले थाईलैण्ड, मुस्लिम देश ओमान, शेक्सपियर के देश इंग्लैण्ड की यात्रावृत इस ग्रंथ मैं समाविस्ट किये गये हैं।

त्रैमासिक पत्रिका 'साहित्य परिक्रमा'

साहित्य के क्षेत्र में वैचारिक वातावरण निर्माण करने और अपेक्षित परिवर्तन को साकार करने में साहित्यिक पत्रिकाओं की प्रमुख भूमिका रहती है। अखिल भारतीय साहित्य परिषद् पिछले बीस पच्चीस वर्षों से **'साहित्य परिक्रमा'** नाम से एक त्रैमासिक पत्रिका का प्रकाशन केन्द्रीय स्तर पर कर रही है। पत्रिका के अंक नियमित रूप से समय पर प्रकाशित होते हैं। आज 'साहित्य परिकमा' पत्रिका देश की प्रमुख साहित्यिक पत्रिकाओं में गिनी जाती है और प्रसिद्धि, लोकप्रियता तथा प्रसार के नित्य नये शिखर प्राप्त कर रही है।

परिषद् की योजना के अनुसार आंचलिक भाषा के साहित्य को देश के सामने लाने के लिये साहित्य परिक्रमा के विशेषांक निकाले जाते हैं। गुजराती, पंजाबी, हिमाचली, बांगला, उड़िया, राजस्थानी भाषा के साहित्य पर विशेषांक प्रकाशित किये गये। एक 'अप्रवासी भारतीय साहित्य' विशेषांक प्रकाशित किया गया। इस श्रृंखला में नये भारत का साहित्य विशेषांक, बुन्देलखण्ड विशेषांक तथा विश्व हिन्दी सम्मेलन फिजी विशेषांक भी उल्लेखनीय हैं।

इसके अतिरिक्त उत्तरप्रदेश से समन्वय, पुष्पवाटिका एवं नवोदित स्वर साधना, राजस्थान से हमारा दृष्टिकोण, साहित्य रथ एवं आहुनीर, दिल्ली से इन्द्रप्रस्थ साहित्य भारती, मध्यप्रदेश से इंगित, मधुचक्र, समवेत सुमन, बिहार से सदानीरा पत्रिकाओं का प्रकाशन परिषद् से जुड़े सदस्यों द्वारा किया जा रहा है।

नैमित्तिक कार्यक्रम समाज जीवन में जो महत्त्वपूर्ण अवसर उपस्थित होते हैं उनसे संबंधित कार्यक्रम साहित्य परिषद् द्वारा किये जाते हैं। अब तक किये गये ऐसे कार्यक्रम हैं- उस मैं 1857 की षष्ठीपूर्ति, स्वतंत्रता के 75 वर्ष, साहित्य परिषद् की स्वर्ण जयन्ती, क्रान्ति तीर्थ वंदन अभियान। स्वतंत्रता संग्राम सार्द्ध शती, स्वामी विवेकानन्द की 150वीं जयन्ती, संविधान जेसे विषयों पर भी सहित निर्माण हुआ है।

अखिल भारतीय साहित्य परिषद से जो साहित्य प्रकाशित हो रहाँ है। उस से समाज परिवर्तन, सामाजिक समरसता, भारतीय जनमानस मे एक सकर्तमाक बदलाव आए, भारतीय मूल्यों को पुनः सथापित किया जाए, भारतीय संस्कृति का वैश्विक संचार हो, देश के जाग्रत मनीषियों मे सकारात्मक बदलाव आए ओर भारतीय एकात्मता ओर अखंडितता साहित्य के द्वारा पुनः स्थापित होगा एसा साहित्य लिखा जाता है। उस साहित्य निर्माण में साहित्य परिषद की भूमिका महत्वपूर्ण है। आज देश के अकादमी ओर शैक्षिक संस्थानोंने जो कार्य नहीं किया है वह कार्य पिछले साठ साल से साहित्य परिषद अपने भिन्न भिन्न आयामों के द्वारा कर रही है। अतः नए भारत के निर्माण में और संस्कृति-मूल्यों के प्रहरी तैयार करना, राष्ट्रभक्त - देशभक्त नागरिक बनाने के लिए परिषद का साहित्य का महत्वपूर्ण योगदान है।

अतः भारत के स्व के जागरण में इस मूल्यवान साहित्य समाज और राष्ट्र की चिति को एकात्म भाव से प्रगट करते हुए भारत बोध की गूंज सुनाता है।